Peer Reviewed
ISSN (P) 2321-290X (E) 2349-980X
Vol-6* ISSUE 6 (Part-1)* February 2019
RNI No. UP... 2013/55321

# Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Peer Reviewed / Refereed Journal

S... (2018) = 6.203

Indexed with Google Scholar

Impact Factor
SJIF = 5.689
GIF = 0.543
IIJIF = 6.038

UGC S.No. ... Shrinkhla UGC Approved

The Research Series

द्विभाषीय मासिक

# Shrinkhala

# शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) February- 2019
RNI - UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
P- ISSN NO.- 2321-290X
E- ISSN NO.:- 2349-980X

# विश्व में बढ़ती साम्प्रदायिकता के निदान का औजार सद्भावना (गाँधीवाद के संदर्भ में)

रणवीर सिंह
अतिथि व्याख्याता,
राजनीति एवं लोकप्रशासन विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर म.प्र.

**सारांश**

गाँधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे – और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसा प्रिय है – वह परिस्थितियों वस ही हिंसावान बनता है। मनुष्य की अहिंसक वृत्ति का ही परिणाम है कि आदिमकाल का वह व्यक्ति जो परिस्थितियों वस नरभक्षी के रूप में जीवन व्यतीत करता था, आज का सभ्य और सुसंस्कृत प्राणी बन गया है। इसमे सन्देह नही कि संसार में हिंसा को पूर्ण अनस्तिव नही है, यह संसार में विद्यमान है और कभी–कभी अपना रूद्र रूप भी प्रकट करती है। परन्तु मानव समाज के विकास का इतिहास यही बताता है कि मनुष्य मूल रूप में अहिंसा प्रिय (सद्भावना) वाला है जिससे मानव जाति निरंतर बढ़ती जा रही है। अतः अहिंसा को मानवीय जीवन का सर्वोच्चय नियम मानते हुए गाँधी जी का मत था कि अहिंसा ही एक व्यवस्थित समाज की स्थापना और मानव जीवन की उन्नति का आधार है, गाँधी जी ने विश्व में बढ़ती साम्प्रदायिकता के निदान का औजार सद्भावना,अहिंसा माना है, और मानव सभ्यता की रक्षा वर्तमान में विश्व बंधुत्व सद्भावना के आधार पर ही संभव है।

**मुख्य शब्द** : अहिंसा, सद्भावना, सामप्रदायिकता, सांप्रदायिक सद्भाव, हिन्दू–मुस्लिम एकता।

**प्रस्तावना**

यदि मानवता को प्रगति करनी है तो गाँधी के विचारों का होना आवश्यक है। मानवता द्वारा प्रेरित उनकी जिंदगी और सोच और उनके कार्य शांति द्वारा प्रेरित दुनिया को कायम रखे हुये हैं यह स्पष्ट है कि गाँधी का जीवन, उनके विचार, संवाद, बातचीत, सुलह, समझौता, प्रेम, क्षमा, सिद्धांत, सत्याग्रह की तकनीक, शांतिपूर्ण अर्थव्यवस्था, सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन, की जब कहीं और जहां कहीं इसकी आवश्यकता हुई है इसके लिये गांधीवाद अत्यधिक प्रभावशाली साधन रहा है।

अमेरिकन पॉदरी डॉ. जान्स हॉम्स का कथन है कि– "ईसा मसीह के बाद गाँधी जी विश्व के सबसे महान व्यक्ति थे।"

जिस देश में गाँधी के अनुयायी हो उस देश को वर्तमान राजनीतिक साम्प्रदायिकता, जातिगत, धर्मगत कोई भी इसकी एकता अखण्डता को प्रभावित नहीं कर सकता, क्योंकि यह गाँधी का देश है। यह देश सदभावना, अखण्डता वाले लोगों का देश है। जिस भारत के मुस्लमान जामा मस्जिद की चाबी हिन्दुओं को सौंप दे, और हिन्दू स्वर्ण मंदिर की चाबी मुस्लमानों को सौंप दें, यहां धर्म जाति आड़े न आये भाईचारा, एकता, विश्वास हो, क्योंकि वह गाँधी का देश है। भारत में जहाँ राम–रहीम, ईसामसीह, बौद्ध और गुरूनानक एक साथ बिराजे हों वह देश सद्भावना वाले भारतियों का देश है, क्योंकि यह देश गाँधी का देश है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

विश्व में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता का हल गाँधीवाद में निहित है। नस्लवाद का प्रतिकार गाँधीवाद का मूल आधार रहा है वर्तमान विश्व स्तर पर होने वाली साम्प्रदायिक हिंसा का एक मात्र हल गाँधीवादी पद्धतियाँ ही हो सकती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य विश्व में बढ़ रहे जातिवाद, साम्प्रदायिकतावाद एवं नस्लवाद की समस्याओं के समाधान में गाँधीवाद की भूमिका को रेखांकित करना है।